गरिना और जादुई अनार

मेल्विन लेयवित

हिंदी: इंदुजी

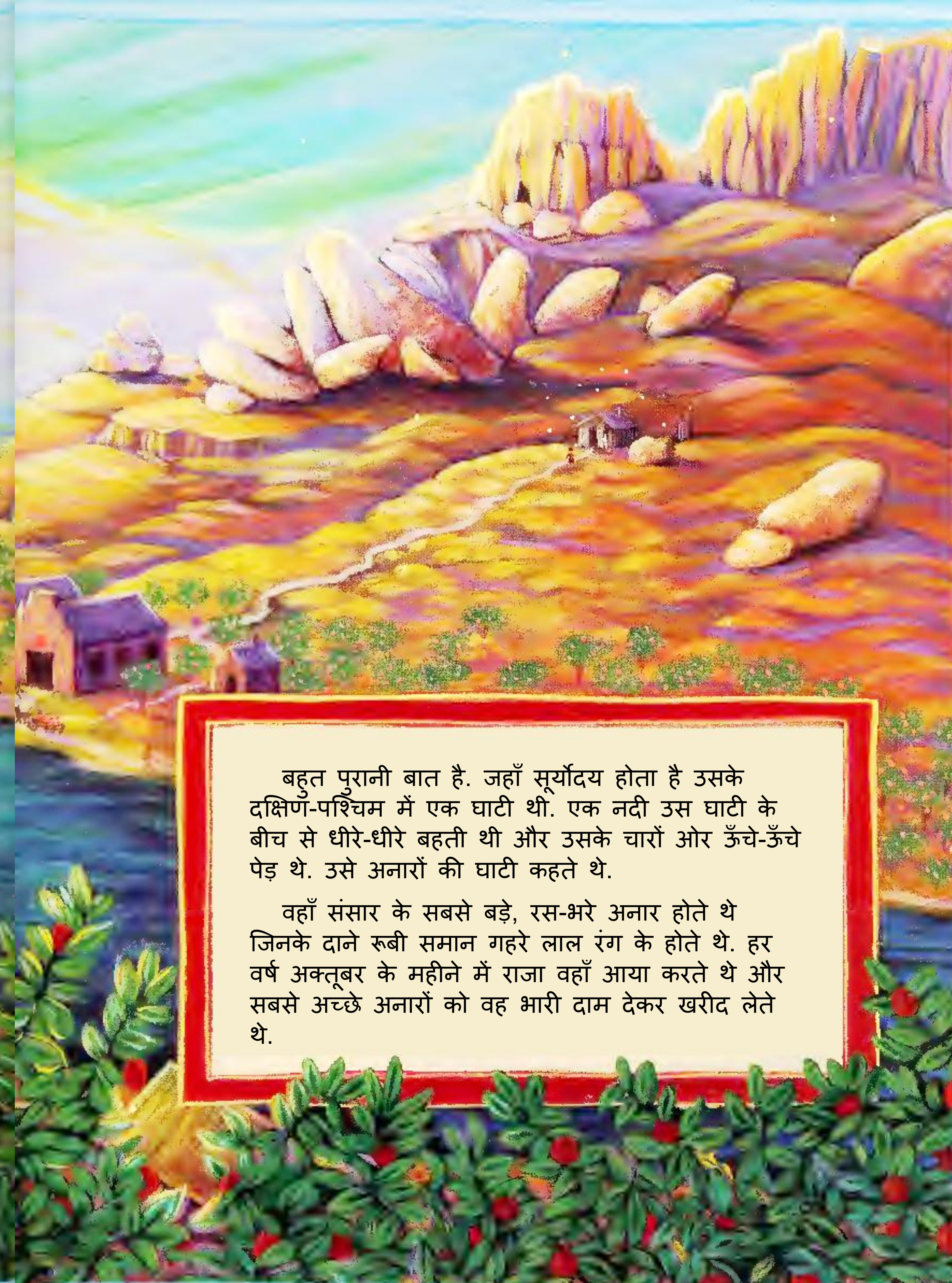


गरिना और जादुई अनार

गरिना और जादुई अनार

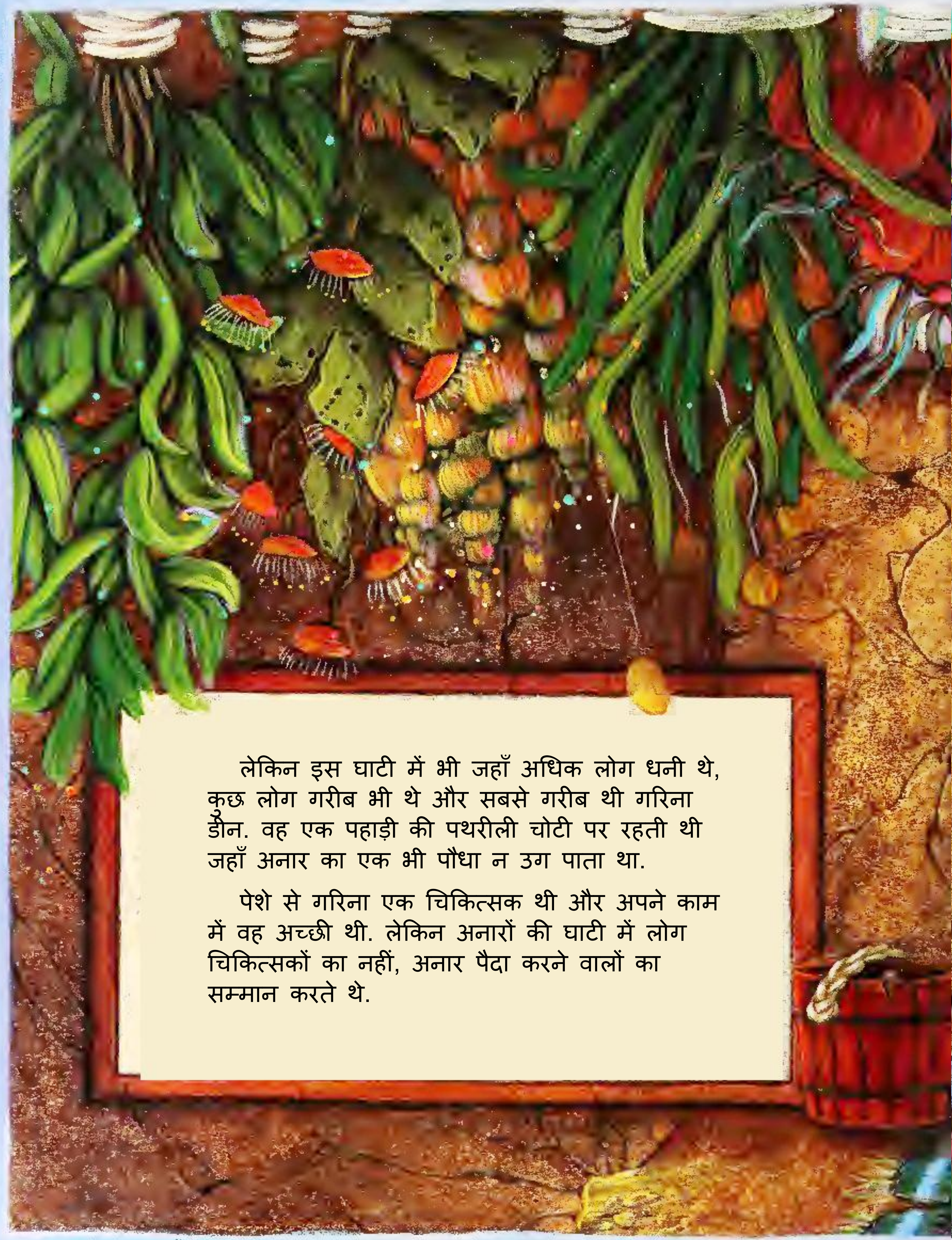
मेल्विन लेयवित
हिंदी: इंदुजी





बहुत पुरानी बात है. जहाँ सूर्योदय होता है उसके दक्षिण-पश्चिम में एक घाटी थी. एक नदी उस घाटी के बीच से धीरे-धीरे बहती थी और उसके चारों ओर ऊँचे-ऊँचे पेड़ थे. उसे अनारों की घाटी कहते थे.

वहाँ संसार के सबसे बड़े, रस-भरे अनार होते थे जिनके दाने रूबी समान गहरे लाल रंग के होते थे. हर वर्ष अक्तूबर के महीने में राजा वहाँ आया करते थे और सबसे अच्छे अनारों को वह भारी दाम देकर खरीद लेते थे.



लेकिन इस घाटी में भी जहाँ अधिक लोग धनी थे, कुछ लोग गरीब भी थे और सबसे गरीब थी गरिना डीन. वह एक पहाड़ी की पथरीली चोटी पर रहती थी जहाँ अनार का एक भी पौधा न उग पाता था.

पेशे से गरिना एक चिकित्सक थी और अपने काम में वह अच्छी थी. लेकिन अनारों की घाटी में लोग चिकित्सकों का नहीं, अनार पैदा करने वालों का सम्मान करते थे.







वसंत की एक रात, दरवाज़े पर ज़ोर की दस्तक से गरिना जाग गई. उसने उठ कर दरवाज़ा खोला. बाहर एक फायरलिंग राजकुमार खड़ा था. डर कर वह थोड़ा पीछे हो गई. फायरलिंग जादुई प्राणी थे और समझदार लोग उनसे दूर ही रहा करते थे.

भय से उस फायरलिंग का चेहरा भद्दा लग रहा था और वह अपनी लंबी उंगलियाँ मरोड़ रहा था. “मेरी बेटी मर रही है,” उसने रोते हुए कहा. “कृपया उसकी मदद करो.”

“मैं-मैं क्-क्या कर सकती हूँ?” गरिना ने हिचकते हुए कहा. “अगर तुम्हारा जादू उसे नहीं बचा सकता तो मैं कैसे बचा पाऊँगी?”

“अब हमारा जादू उस पर प्रभाव नहीं डाल सकता,” फायरलिंग के आँसू रुक न रहे थे. “लेकिन जादू से अधिक प्रभावी चीज़ें भी होती हैं. बहुत दूर अपने पत्थरों के किले में मैंने तुम्हारी समझ और नेकी को महसूस किया है. तुम मदद कर सकती हो. कृपया मेरे साथ चलो.”

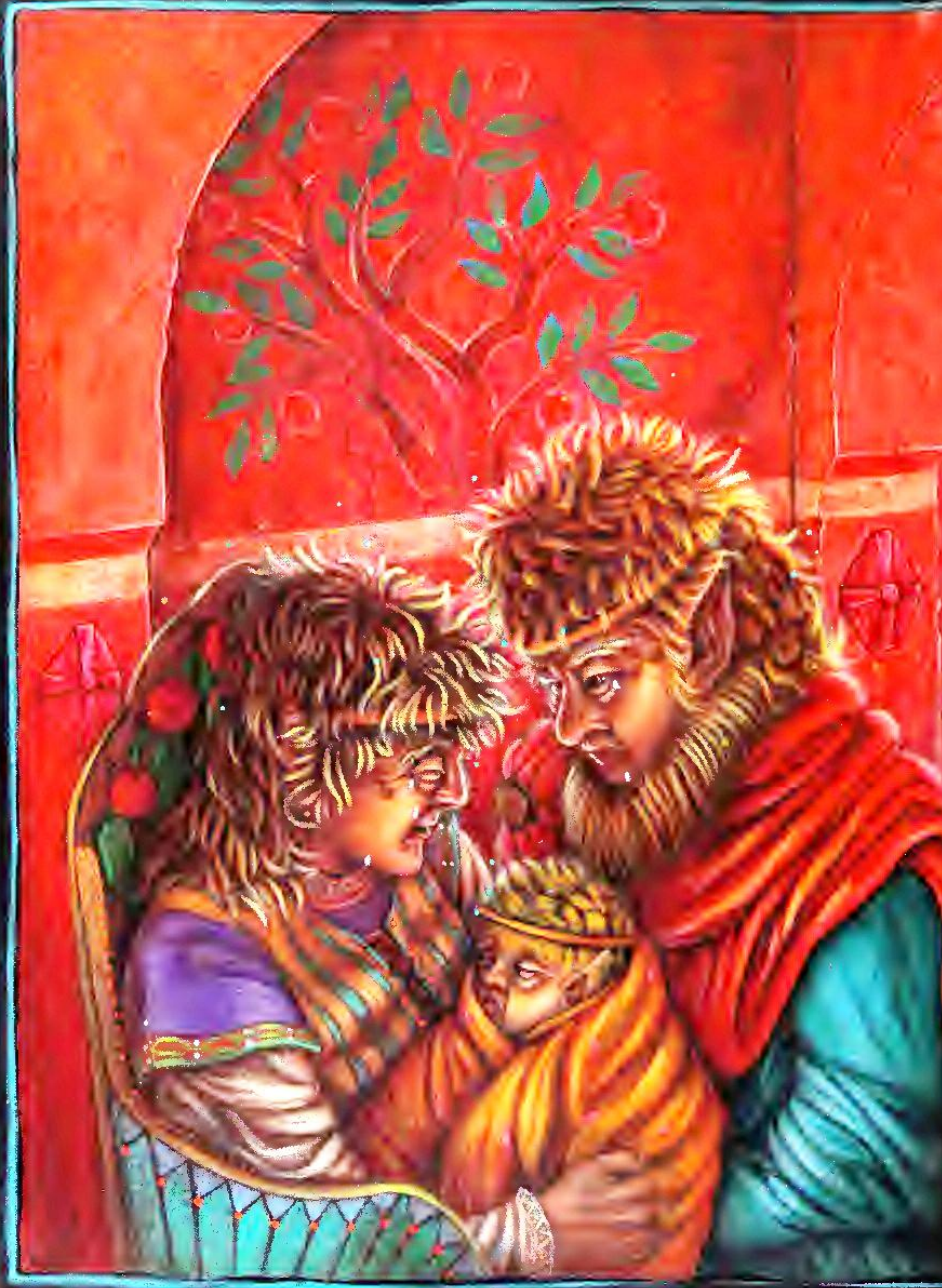
गरिना ने एक पुरानी शाल अपने कंधों पर ओढ़ ली. अपनी दवाइयों की पोटली लेकर रात के अंधेरे में वह फायरलिंग राजकुमार के पीछे चल पड़ी. बाहर एक ऊँचा घोड़ा उनकी प्रतीक्षा कर रहा था. वह दोनों उस पर सवार हो गए.

अंधेरे में वह लंबे समय तक घोड़े पर तेज़ी से आगे चलते गए. आखिरकार वह उस जगह रुके जहाँ दो विशाल चट्टानों को तराश कर दो अनोखे जीव बनाए गए थे. उन चट्टानों के बीच गरिना ने उस जगह की झलक देखी जो सपनों में भी उसे आतंकित करती रही थी-आग की घाटी. यह जगह सतायी हुई आकृतियों का एक जंगल थी. लहू के लाल रंग की इमारतें और शिखर अग्नि की लपटों समान लग रहे थे. यहीं फायरलिंग प्रजाति के जीव रहते थे. आज तक कोई भी मनुष्य इस घाटी के भीतर जाकर वापस लौट न पाया था.

फायरलिंग राजकुमार ने गरिना की आँखों पर पट्टी बांध दी. "तुम्हारे लिए यही अच्छा होगा कि तुम कुछ न देखो," उसने कहा. गरिना का दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था.









जब उसकी आँखों से पट्टी हटाई गई तो गरिना ने देखा कि वह गुलाबी रंग के पत्थरों से बने एक बड़े कमरे के अंदर थी. कमरे में एक भी खिड़की न थी पर वहाँ बहुत रोशनी थी. ऐसा लग रहा था कि कमरे की दीवारें भी जादुई थीं. एक कोने में एक फायरलिंग औरत एक बच्चे को पकड़े बैठी थी. गरिना ने महसूस किया कि उसका भद्दा चेहरा ममता से दमक रहा था. यह प्राणी दुष्ट नहीं हैं, उसने सोचा, लेकिन इनका जादू इनको डरावना बना देता है.



गरिना ने बच्चे को अपनी गोद में उठाया. नन्ही लड़की तपते हुए बुखार के कारण ठंडी पड़ गई थी. उसका नन्हा हृदय बहुत धीमे धड़क रहा था. गरिना ने बच्ची को बिलकुल पास लाकर उसकी जांच की. धीरे-धीरे गरिना को बच्ची की बीमारी का पता चला. उसे मन में सींगों वाला एक काला, डरावना दानव दिखाई दिया. वह समझ गई कि बच्ची की ऐसी दशा उस जादू के कारण थी जो नियंत्रण के बाहर हो गया था. फायरलिंग के चिकित्सकों के जादू ने उस दानव की शक्ति को बढ़ा दिया था





बच्ची का इलाज करने के लिए उस जादू के प्रभाव को खत्म करना ज़रुरी था. लेकिन कैसे? गरिना ने बच्ची को उसकी माँ को सौंप दिया. फिर उसने अपनी पोटली से अनार के रस का एक जार निकाला. उसने अपने मन को शांत किया और अनार के रस को पूरी तरह शुद्ध और जादू रहित बना दिया. उसने रस को अपनी हथेलियों पर लगाया और अपने पांव के तलवों पर उसे मला.

अनार के रस से रंगे लाल हाथों में उसने बीमार बच्ची को उठाया. उसी पल सारा जादू बच्ची के शरीर से निकल कर गरिना के भीतर आ गया. अग्नि समान उसे जलाता हुआ वह जादू उसके पांव के रास्ते जीवित पत्थरों में चला गया. आसपास की हर वस्तु उसे लाल रंग की दिखाई देने लगी. फिर अचानक सब कुछ अंधेरे में खो गया.

जब वह नींद से उठी तो उसने पाया कि वह एक पत्थर के बिस्तर पर लेटी थी. फायरलिंग राजकुमार और राजकुमारी उसके पास खड़े थे. राजकुमार के हाथ में अनार का एक नन्हा पौधा था.

“बच्ची.....”गरिना ने पूछा.

फायरलिंग महिला मुस्कराई, “वह स्वस्थ है.”

फायरलिंग राजकुमार निकट आया और उसने वह पौधा गरिना को दिया. “इसे हमारे धन्यवाद सहित स्वीकार करो,” उसने कहा. “इसे अपनी पहाड़ी पर लगाना. और इसी ऋतु में यह फल देगा. लेकिन ध्यान रखना, हम लोगों के उपहार भयंकर होते हैं और कई बार भला करने के बजाय यह हानि पहुँचाते हैं. वचन दो कि इस पौधे की पहली उपज न तुम खाओगी और न ही उसे बेचोगी.”

गरिना ने पौधे को संदेह की दृष्टि से देखा. “मैं वचन देती हूँ. लेकिन मेरी भूमि में कुछ भी नहीं लगता.”

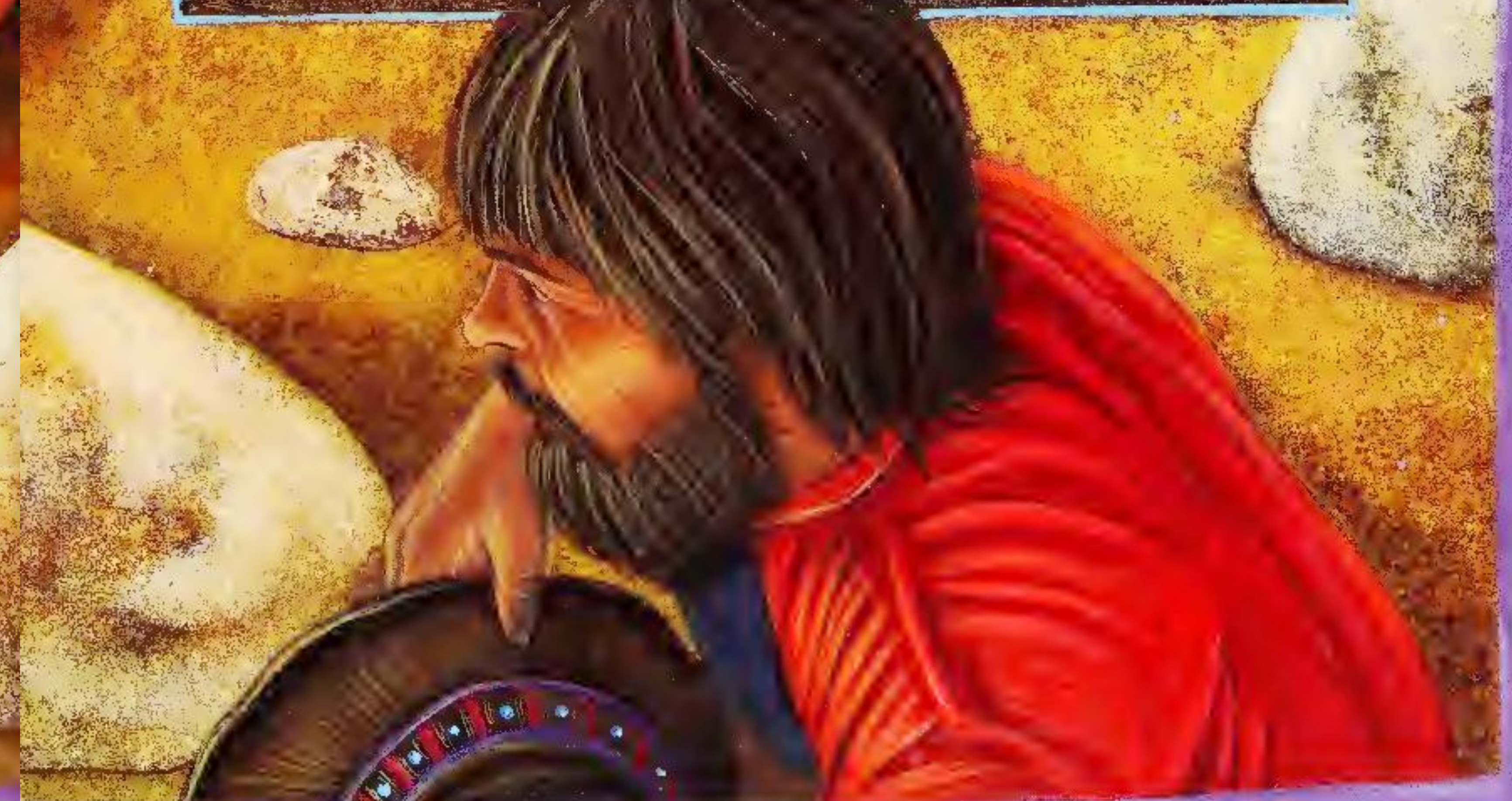
“यह पौधा लगेगा और बढ़ा भी होगा,” फायरलिंग राजकुमार ने कहा. “इसे खूब पानी देना, नदी का पानी और अपनी आँखों का भी. तुम्हारे पास दोनों की कमी न होगी.”

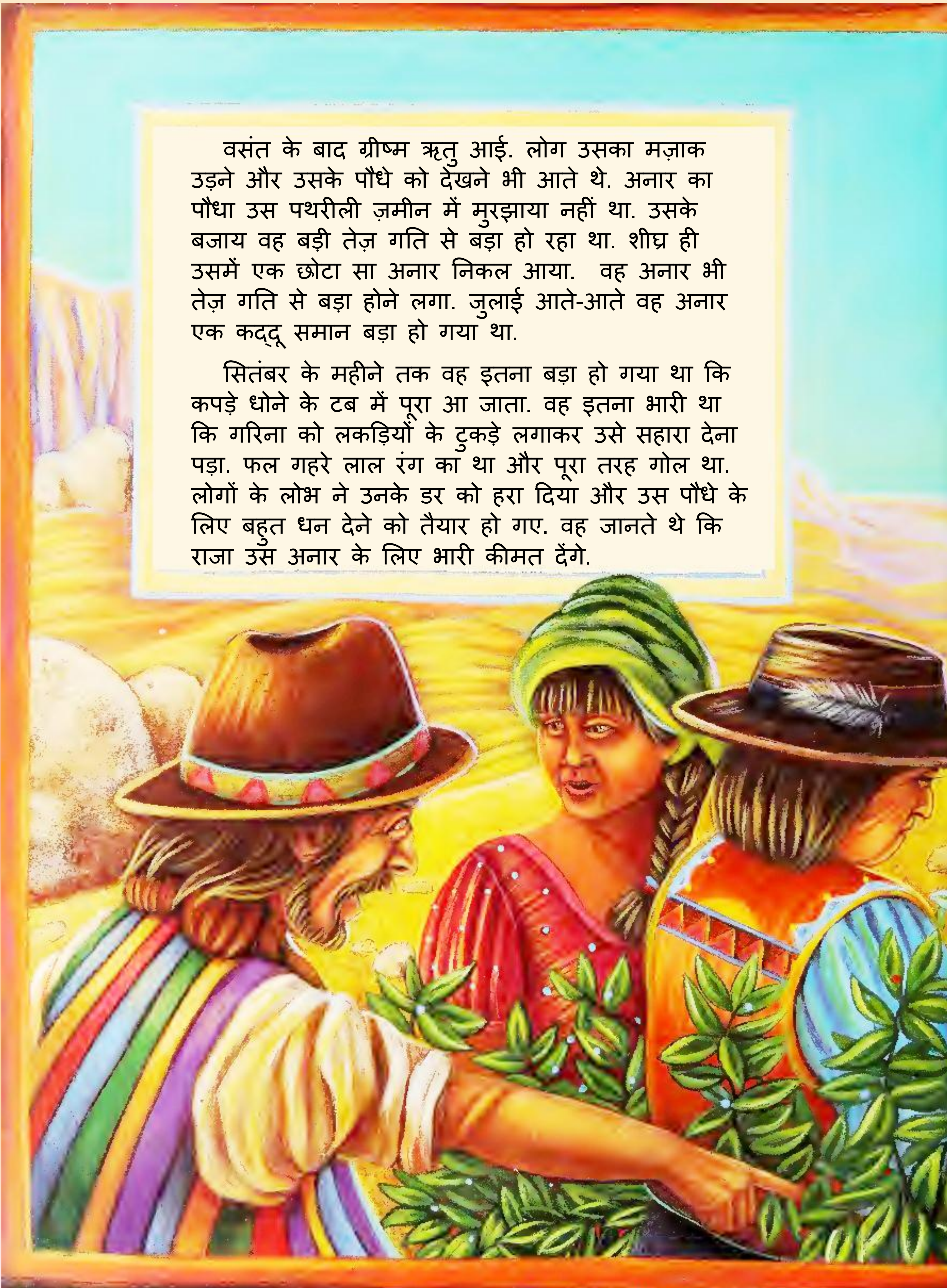




फायरलिंग राजकुमार की बात सत्य निकली. लेकिन चुगली करने वाले और ताक-झांक करने वाले कभी शांत नहीं बैठते. उन्होंने गरिना को आग की घाटी में जाते देख लिया था. जब वह घर वापस आई तो कुछ लोग उसे “फायरलिंग-प्रेमी” और “डायन” बुलाने लगे. वह उसका अपमान करते. गरिना ने अनार का पौधा अपने घर के पास लगा दिया. हर दिन वह नदी से पानी लेकर आती और पौधे को पानी देती. और वह बहुत आँसू भी बहाती.

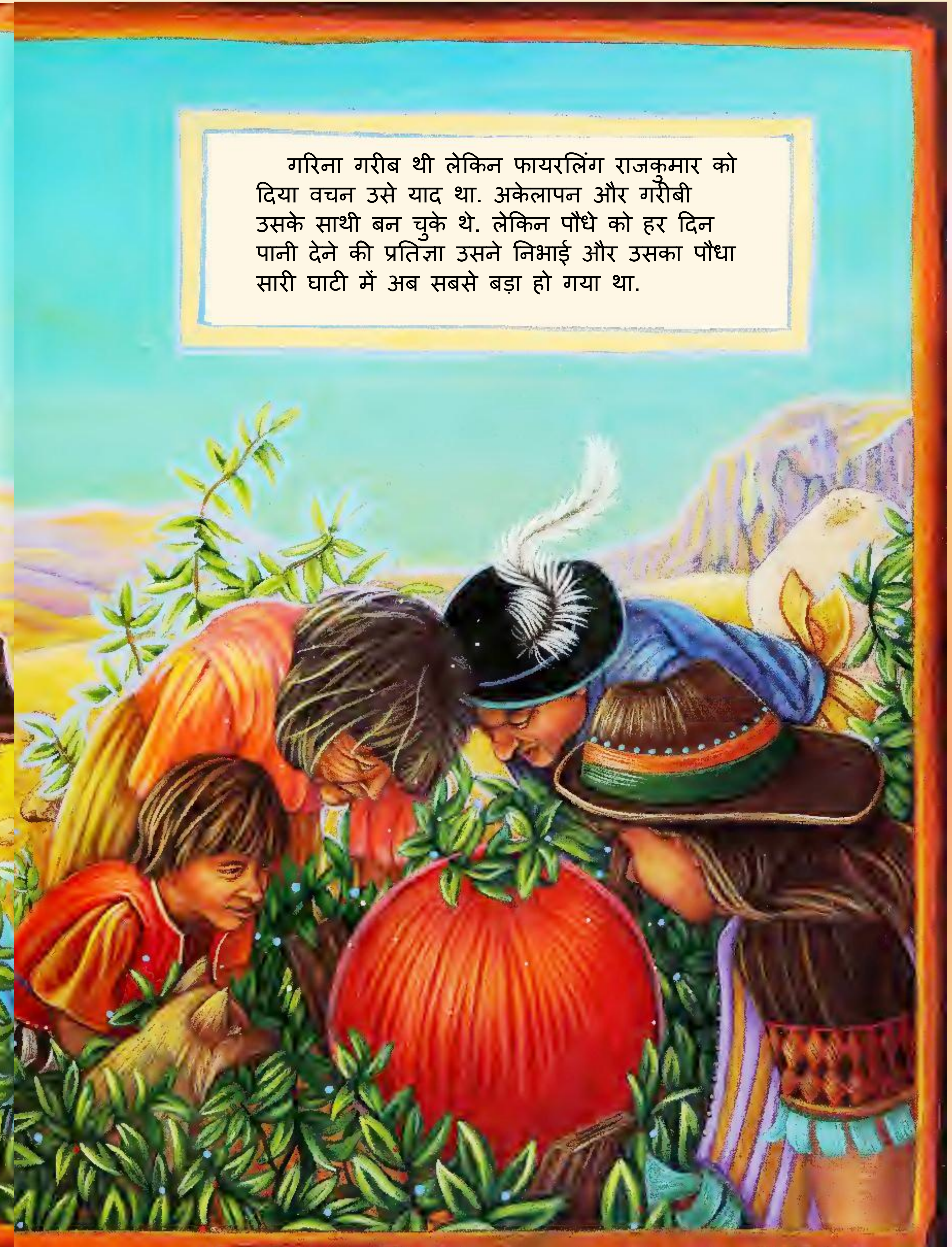
लोग वहाँ आकर उसका मज़ाक उड़ाते. “जाओ, जाकर आग का घाटी में अपने दोस्तों के साथ रहो!” वह उस पर चिल्लाते. उनका बस चलता तो वह अनार के पौधे को उखाड़ कर जला देते लेकिन उनमें इतना साहस नहीं था कि फायरलिंग लोगों के उपहार को छू लेते. लेकिन सबसे दुखदायी बात थी कि वह गरिना को रोगियों का इलाज न करने देते थे. किसी को रोग से तड़पता देखकर उसे बहुत कष्ट होता था.





वसंत के बाद ग्रीष्म ऋतु आई. लोग उसका मज़ाक उड़ने और उसके पौधे को देखने भी आते थे. अनार का पौधा उस पथरीली ज़मीन में मुरझाया नहीं था. उसके बजाय वह बड़ी तेज़ गति से बड़ा हो रहा था. शीघ्र ही उसमें एक छोटा सा अनार निकल आया. वह अनार भी तेज़ गति से बड़ा होने लगा. जुलाई आते-आते वह अनार एक कद्दू समान बड़ा हो गया था.

सितंबर के महीने तक वह इतना बड़ा हो गया था कि कपड़े धोने के टब में पूरा आ जाता. वह इतना भारी था कि गरिना को लकड़ियों के टुकड़े लगाकर उसे सहारा देना पड़ा. फल गहरे लाल रंग का था और पूरा तरह गोल था. लोगों के लोभ ने उनके डर को हरा दिया और उस पौधे के लिए बहुत धन देने को तैयार हो गए. वह जानते थे कि राजा उस अनार के लिए भारी कीमत देंगे.



गरिना गरीब थी लेकिन फायरलिंग राजकुमार को दिया वचन उसे याद था. अकेलापन और गरीबी उसके साथी बन चुके थे. लेकिन पौधे को हर दिन पानी देने की प्रतिज्ञा उसने निभाई और उसका पौधा सारी घाटी में अब सबसे बड़ा हो गया था.

अनार के फल तोड़ने के समय राजा स्वयं अपने मंत्रियों के साथ अनारों की घाटी आये.

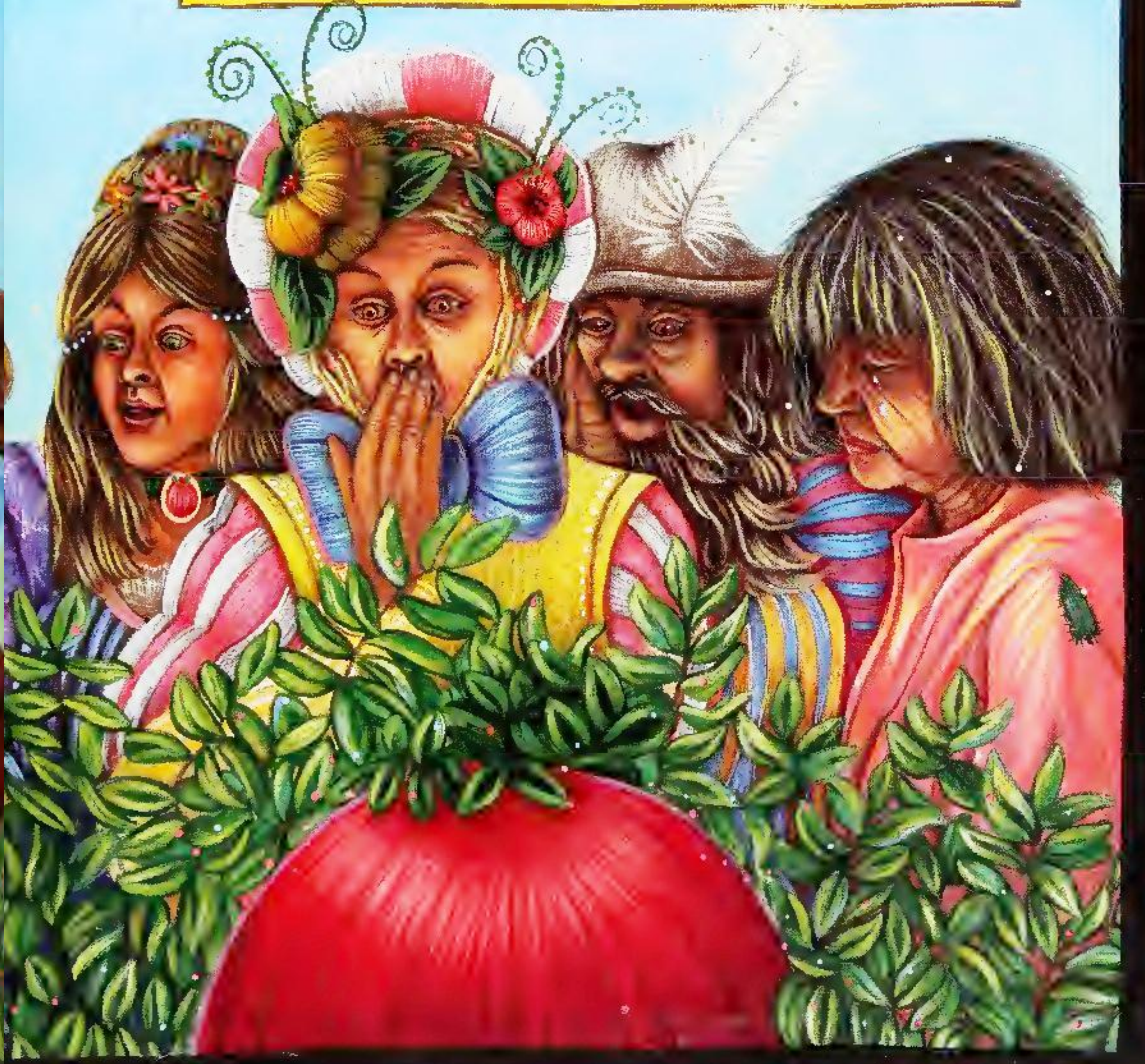
“गरिना, हम तुम्हारा अद्भुत अनार देखकर बहुत प्रसन्न हैं,” राजा ने कहा. “इस फल के लिए हम तुम्हें चाँदी के दस हज़ार सिक्के देंगे.” सारे मंत्री और घाटी के सब लोग आश्चर्यचकित हो गए. इतने पैसे तो साधारणतया घाटी के सारे फलों के लिए दिए जाते थे.



गरिना की आँखों से आँसू बहने लगे. वह बहुत गरीब थी, भूख से बेहाल थी और हर किसी के उस पर गुस्सा करने से थक चुकी थी.

“मुझे खेद है,” उसने धीमी, सहमी आवाज़ में कहा, “लेकिन मैंने वचन दिया है कि इस पेड़ का पहला फल किसी ओर को दूँगी.”

राजा क्रोधित हो गए. “क्या?” वह चिल्लाये. “इस देश में राजा से पहले कौन आ सकता है?”





उसी समय अनार के पौधे के पीछे से फायरलिंग राजकुमार सामने आया. "कृपया क्रोध न करें," उसने राजा से कहा, "क्योंकि वह सिर्फ अपना वचन निभा रही है. मैं वह हूँ जिसे इसने पहला फल देने का वचन दिया था और मैं फल लेने आया हूँ." उसने फल को तोड़ लिया और उसे इतनी सरलता से उठा लिया जैसे कि वह एक साधारण आकार का फल था.

"और अब," उसने कहा, "तुम सब इसके बीज देखना चाहोगे." फिर राजकुमार ने उस विशाल अनार को अपनी मज़बूत, लंबी उंगलियों से आसानी से तोड़ दिया. लोग आश्चर्य से देखते रह गए क्योंकि उसके दाने अखरोटों समान बड़े थे और लाल रूबी की तरह चमक रहे थे. फायरलिंग राजकुमार ने एक दाना निकाल कर राजा की ओर फेंका.

राजा चकित हो गया. यह एक रूबी था.



"फायरलिंग लोगों के उपहार संकटपूर्ण होते हैं," फायरलिंग राजकुमार ने कहा, "लेकिन तुम्हारी अच्छी चिकित्सक ने अपना वचन निभा कर इस भयंकर उपहार को वश में कर लिया है." इतना कह कर वह नीचे झुका और उसने अनार के दोनों भाग गरिना के पांव के पास रख दिए. "यह पौधा और इसके सारे फल तुम्हारे हैं," फायरलिंग राजकुमार ने कहा.

जहाँ गरिना की झोंपड़ी थी उसी जगह उसने अपने लिए एक सुंदर घर बना लिया और बचे हुए रुबी उसने गरीबों की मदद के लिए उपयोग किए. समय बीतने के साथ उसका अनार का पौधा एक बड़ा वृक्ष बन गया और उस पर हर वर्ष, पिछले वर्ष की तुलना में, बड़े अनार लगते. लेकिन गरिना को सबसे अधिक सुख रोगियों का इलाज करने से मिलता. वह सब का इलाज करती, मनुष्यों का और फायरलिंग जीवों का. उसे इसी से आनंद मिलता. धन कभी भी उसे लुभा न पाया.

गरिना और फायरलिंग जीव और अनारों की घाटी के लोग अब इस धरती से विदा हो चुके हैं. लेकिन जहाँ सूर्योदय होता है उसके दक्षिण-पश्चिम में जो एक जगह है जहाँ अब भी अग्नि समान चट्टानें देखी जा सकती हैं. और वहीं निकट ही एक घाटी है जहाँ एक नदी धीरे-धीरे बहती है और चारों ओर ऊँचे-ऊँचे पेड़ हैं, वहाँ अभी भी अनार के पेड़ों पर बड़े-बड़े लाल अनार लगते हैं.





